इकाई 10 गीत–संगीत के कार्यक्रम और कंपीयरिंग लेखन

इकाई की रूपरेखा

10.0 उद्देश्य

10.1 प्रस्तावना

10.2 फिल्मी गानों पर आधारित कार्यक्रम

10.3 गैर–फिल्मी गानों पर आधारित कार्यक्रम

10.4 कंपीयरिंग की भाषा

10.5 संगीत का ज्ञान

10.6 कंपीयरिंग लेखन के लिए महत्त्वपूर्ण बिंदु

10.7 कंपीयरिंग के लिए योग्यताएँ

10.8 सारांश

10.9 अभ्यास के प्रश्न

10.10 महत्त्वपूर्ण पुस्तकें

10.0 उद्देश्य

- इस इकाई में आप गीत–संगीत के कार्यक्रमों से साक्षात्कार करेंगे/करेंगी,
- गीत–संगीत के कार्यक्रमों की कंपीयरिंग के बारे में आप जानेंगे/जानेंगी,
- गीत–संगीत की कंपीयरिंग का क्या महत्त्व है, आप इससे भी परिचित होंगे/होंगी,
- कंपीयरिंग कैसे तैयार की जाती है, आप इसके बारे में समझेंगे/समझेंगी,
- कंपीयरिंग लेखन में किन–किन बातों का विशेष महत्त्व है, आपको इसके बारे में जानकारी मिलेगी और
- इस इकाई में आप कंपीयरिंग करने के कौशल से भी परिचित होंगे/होंगी और अपने को भी इस योग्य बनाने में सक्षम होंगे/होंगी।

10.1 प्रस्तावना

टेलीविज़न के कई चैनल गीत–संगीत के कार्यक्रमों को महत्त्व देते हैं। संगीत भारतीयों की आत्मा में निवास करता है। वैदिक काल से ही संगीत का महत्त्व रहा है। सामवेद तो संगीत पर ही आधारित है। यहाँ अनेक तरह के राग और रागिनियों में कवियों ने भी अपनी रचनाएँ की हैं। विद्यापति मैथिल कोकिल के ही रूप में

प्रसिद्ध हैं। उनकी रचनाएँ आज भी मिथिला की रमणियों के कंठ में बसी रहती हैं। बाबा बुल्ले शाह, अमीर खुसरो, काजी नजरूल, रवीन्द्रनाथ ठाकुर आदि की रचनाओं का गायन आज भी रेडियो और टेलीविज़न से प्रसारित किया जाता है। कबीर, मीरा, सूर, तुलसी, प्रसाद, निराला, महादेवी सभी की रचनाओं को गाया जाता है और इनका भी प्रसारण रेडियो और टेलीविज़न से किया जाता है। भारतीय संगीत में लोक–संगीत तो है ही, शास्त्रीय संगीत की भी लंबी परंपराएँ हैं। पश्चिम के प्रभाव से तरह–तरह के गाने सामने आते हैं और धुन निर्मित होती रहती हैं जो प्रायः किशोरों और युवकों में ज्यादा लोकप्रिय हैं। पर सबसे अधिक लोकप्रिय तो फिल्मों के गाने होते हैं जहाँ तरह– तरह के प्रभावों को ग्रहण कर धुन बनाई जाती है। वहाँ संगीत का सिंथेटिक या संग्रथित रूप ज्यादा महत्त्वपूर्ण माना जाता है। फिल्मों में ग़ज़लें या कव्वालियाँ बहुत लोकप्रिय रहीं लेकिन उनको स्वतंत्र रूप से गाने वालों की संख्या भी कभी कम नहीं रही है। तात्पर्य यह है कि गीत–संगीत के कंपीयरिंग लेखक को भारतीय संगीत की विभिन्न धाराओं और उपधाराओं की जानकारी होनी चाहिए। भारत में जितने तरह के क्षेत्र हैं, उतने तरह के संगीत भी हैं। संगीत के विभिन्न घराने हैं। यहाँ शास्त्रीय संगीत है, तो कर्नाटक संगीत और रवीन्द्र संगीत भी है। हिंदी भाषी क्षेत्र को ही यदि हम लें, तो यहाँ गाने बजाने की कई शैलियाँ रही हैं। ब्रज के आसपास जो गाया–बजाया जाता है, अवध में भी वह वैसा ही हो, ऐसा आवश्यक नहीं है। राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में संगीत अपने अलग ही अंदाज़ और कशिश में सुना–सुनाया जाता है और पहाड़ी धुनों को भला कौन भूल सकता है। वस्तुतः चार कोस पर केवल बोली बानी ही नहीं बदलती, संगीत का अंदाज़े–बयाँ भी कोई न कोई खूबी अख़्तियार करता चलता है। यह लोक–धुनों के बीच के अंतर में ही नहीं, बल्कि शास्त्रीय संगीत में तरह–तरह के घरानों के अस्तित्व में भी पता चलता है। इन सबके बीच में कबीलाई संगीत की थापें और आहटें बिलकुल अलग हैं। गीत–संगीत के कार्यक्रम की कंपीयरिंग करने और लिखने वाले के मन में इस वैविध्य का ज्ञान होना चाहिए। कंपीयरिंग में यदि ध्वनियाँ–अनुध्वनियाँ कम होती हैं तो यह मानना चाहिए कि अनभिज्ञता, अपरिचय और अज्ञान का बोलबाला है। किस गाने में कौन–सी दूर की धुन बसी हुई है, यह कहने वाले लगातार कम हो रहे हैं। जो हैं, उन्हें गुमनामी की राह दिखा दी गई है। कंपीयरिंग में शालीनता होनी चाहिए। कंपीयरिंग करने वाले की शालीन भाषा और मुस्कुराहट का भी विशेष महत्त्व होता है।

10.2 फिल्मी गानों और शास्त्रीय संगीत पर आधारित कार्यक्रम

गीत–संगीत के कार्यक्रम में सबसे ज्यादा लोकप्रिय फिल्मी गाने रहे हैं। इसके कारणों का पता लगाना कोई बहुत कठिन नहीं है। फिल्मी गाने आम जनता और उनमें भी युवक–युवतियों को ध्यान में रखकर तैयार किए जाते हैं। इसका लगातार एक गहरा और विस्तृत व्यावसायिक आधार होता है। गीतों को तैयार करने के पीछे यह प्रयत्न होता है कि गाना हिट या सुपर–हिट हो। फिल्मी गाने उच्छलता के साथ उच्छृंखलता के भी उदाहरण रहे हैं। कोई गाना किसी भारतीय राग से शुरू होकर पश्चिम के पॉप का रूप कब अपना लेगा यह कहा नहीं जा सकता है। कहना चाहिए कि फिल्मों ने गानों के मामलों में ग्रहणशीलता के अद्‌भुत प्रमाण दिए हैं। ग़ज़ल, कव्वाली, पश्चिमी पॉप, भारतीय लोक और शास्त्रीय संगीत के स्रोत कुछ

भी हो सकते हैं। फिल्मी गाने मिश्रित संस्कृति के शायद सबसे जीवंत उदाहरण हैं। फिल्मी गानों से संबंधित कंपीयरिंग में इस समझ की उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए। इन लोकप्रिय गीतों को प्रस्तुत करने के सभी अंदाज़ ईजाद कर लिए गए हैं। एक बहुत लोकप्रिय प्रारूप तो यही है कि किसी हफ़्ते के दस या बीस या तीस सबसे लोकप्रिय गीतों को प्रस्तुत किया जाता है। इन्हें प्रस्तुत करने का एक तरीका तो यह है कि यह बता दिया जाए कि पिछले हफ़्ते कौन–सा गीत किस पायदान पर था और इस हफ़्ते इसका नंबर क्या है लेकिन इन कार्यक्रमों में केवल गीतों के क्रम की सूचना ही नहीं दी जाती। उसे रोचक बनाकर प्रस्तुत करने की कोशिश भी की जाती है। आपने यह देखा होगा कि काउंट डाउन के अधिकांश कार्यक्रमों में कोई विषय चुन लिया जाता है और उसी के इर्द–गिर्द बातों और एक के बाद दूसरे गीत को आगे बढ़ाया जाता है। उदाहरण के लिए एक विषय हो सकता है – 'पड़ोसी'।

फिल्मी गानों के काउंट डाउन में कई बार किसी नए यूरोपीय शहर की सैर करा दी जाती है और दर्शक नई जगह देखने की लालसा में कार्यक्रम देखता रहता है। कुछ काउंट डाउन शो कॉमेडी को अपना मूल आधार बनाते हैं। एक काउंट डाउन में पंकज कपूर और सतीश कौशिक आते थे। वे किसी कॉमिक कथा को थोड़ा–थोड़ा आगे बढ़ाते थे। थोड़ा–थोड़ा इसलिए कि बीच–बीच में गाना भी तो बजना होता है। साजिद खान ने भी गानों को हँसा–हँसा कर प्रस्तुत किया। दरअसल यह कंपीयरिंग के पुराने प्रारूप को आगे ले जाते हैं। कंपीयरिंग की इस नई विधा में बहुत विदग्धता होती है। साजिद खान तो हैं भी बहुत गुणी लेकिन गुणी से गुणी कलाकार को भी एक अच्छे आलेख की ज़रूरत होती है।

दूरदर्शन का डी डी भारती चैनल कला और संस्कृति को काफ़ी महत्त्व दे रहा है। यह चैनल भारतीय शास्त्रीय संगीत और लोक संगीत को भी महत्त्व दे रहा है। जी टी.वी. पर सा रे गा मा पा का कार्यक्रम काफ़ी लोकप्रिय कार्यक्रम है। गोरखपुर दूरदर्शन पर ग़ज़ल के कार्यक्रम और उसकी कंपीयरिंग को देखिए :

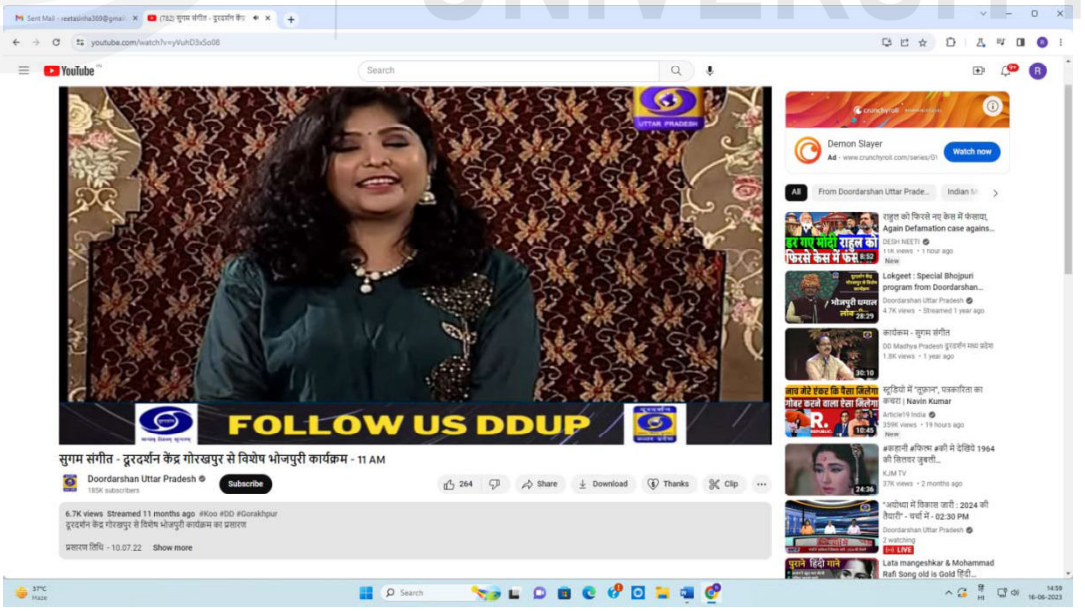

https://www.youtube.com/watch?v=yVuhD3xSo08

(गोरखपुर दूरदर्शन से साभार)

इसमें दीप्ति श्रीवास्तव ने ग़ज़ल की दुनिया में काफ़ी प्रसिद्ध राहत अली खां साहब और उनके शागिर्द की चर्चा की है। कंपीयरिंग में जिस व्यक्तित्व की चर्चा होती है, उसकी भाषा के निकट ही अपनी भाषा रखनी पड़ती है। जिस तरह का संगीत है, उसके बारे में कंपीयरिंग करनेवाले को विशिष्ट जानकारी रहनी आवश्यक है। तभी कंपीयरिंग स्वाभाविक रूप से आगे बढ़ती है और संगीत के लिए पृष्ठभूमि तैयार करती है। इस कंपीयरिंग में आप देख सकते हैं कि दीप्ति श्रीवास्तव ने जिस प्रकार के शब्दों का चयन किया है, वह भाषा की जीवंतता में वृद्धि करता है और भाषा को प्रवाहमयी बनाता है।

भारतीय लोक सेवा प्रसारण 'दूरदर्शन' पर एक शो प्रसारित होता था जिसका नाम था चित्रहार। इसे हर शुक्रवार प्राइम टाइम पर प्रसारित किया जाता था। आधे घंटे के इस शो में नए ताजे गाने सुनाए जाते थे जिसे सुनकर मन को काफ़ी शांति मिलती थी। इस शो को तराना राजा ने 2001 से 2004 तक होस्ट किया था। शो में वह यह बताती थीं कि कौन सा गाना इस हफ्ते टॉप पर रहा। चित्रहार शो के प्रति लोगों की दीवानगी सिर्फ भारत में ही नहीं थी, बल्कि यह कार्यक्रम विदेशों में भी काफ़ी प्रचलित था। इसमें तराना राजा की एकरिंग को भी काफ़ी पसंद किया जाता था। उनके घुंघराले बाल और बोलने की शैली लोगों को इस शो से जोड़े रखती थी। दूरदर्शन के कई चैनल और डी डी भारती से समय–समय पर शास्त्रीय संगीत का प्रसारण होता है। आपने उस समय की कंपीयरिंग भी देखी होगी और आपने यह अनुभव किया होगा कि जिस राग या रागिनी में गायक या गायिका का गायन होता है, उस राग या रागिनी की विशेषताओं के बारे में कंपीयरिंग करने वाले की जानकारी आवश्यक होती है। जी टी. वी.पर आने वाला सा रे गा मा पा प्रोग्राम की प्रसिद्धि इतनी अधिक है कि लोग इस प्रोग्राम को देखने के लिए शनिवार और रविवार की प्रतीक्षा करते हैं। यह कार्यक्रम रात के नौ बजे जी टी. वी पर प्रसारित होता है।

आपने जी टीवी पर सा रे गा मा पा का प्रसारण देखा होगा। यह भारत में काफ़ी अधिक चलने वाला हिंदी भाषा का रियलिटी सिंगिंग टेलीविज़न शो है, जिसके अबतक नौ सीजन्स का प्रसारण हो चुका है। पहले सीजन के पहले एपिसोड का प्रसारण 1 मई, 1995 में हुआ था, जिसकी मेज़बानी सोनू निगम ने की थी। सन् 2000 में इसकी मेज़बानी बंगश बंधुओं, अमान अली बंगश और अयान अली बंगश ने की। 2002 से इसकी कंपीयरिंग शान ने आरंभ की। सन् 2005 तक शो एक निश्चित प्रारूप में प्रसारित हुआ जिसमें संगीत के विशेषज्ञ जज के रूप में रहते थे और वे प्रतिभागियों को अंक देते थे। धीरे–धीरे इसमें परिवर्तन दिखाई देने लगा। आप जानते हैं कि भारतीय शास्त्रीय संगीत में सुर सप्तक हैं सा रे ग म प ध नि। इस शो में पहले पाँच स्वरों को लिया गया है। 2022 में आरंभ हुए सा रे गा मा पा के नौवें सीजन में शंकर महादेवन जज नियुक्त किए गए, जो सा रे गा मा पा फ्रेंचाइजी का अभिन्न हिस्सा रहे हैं। भारतीय संगीत जगत के सबसे चहेते सिंगर्स एवं कंपोजर्स में से एक शंकर महादेवन ने इंडस्ट्री को रिकॉर्ड तोड़ने वाले कई एल्बम दिए हैं।

पिछले कई वर्षों से जी टी.वी ने अंत्याक्षरी और सा रे गा मा पा जैसे फिल्मी गानों पर आधारित काफ़ी पॉपुलर टैलेंट बेस्ट रियलिटी शो प्रसारित किए, जो आज भी दर्शकों के लिए यादगार शो हैं। नौवें सीजन में जी.टी.वी ने अपने इस रियलिटी शो

'लिटिल चैम्स' में छोटे–छोटे बच्चों को गाने का अवसर दिया जिससे उनको संगीत के क्षेत्र में अपनी पहचान बनाने का मौका मिल सके।

इस रियलिटी शो के होस्ट सोनू निगम, शान, आदित्य नारायण आदि रहे। उन्होंने कंपीयरिंग करते समय गाए जाने वाले गानों के विभिन्न संदर्भों, प्रतियोगियों की विशेषताओं, जजों के व्यक्तित्व और उनके संगीत की विशिष्टताओं, मनोरंजन आदि का विशेष ध्यान रखा, जिससे उनकी भाषा में किसी शब्द विशेष के लिए विशेष आग्रह नहीं दिखाई देता है। वे ऐसी भाषा में कंपीयरिंग करते दिखाई दिए, जो बच्चों से लेकर अन्य दर्शकों को अच्छी तरह समझ में आ जाए। उनकी भाषा में संवेदना, चित्रात्मकता, संप्रेषणीयता, मनोरंजन के तत्व आदि का स्वाभाविक समावेश दिखाई दिया। ऐसे रियलिटी शो की कंपीयरिंग के समय पोशाक, चेहरे की सकारात्मकता, मुस्कान युक्त हाव–भाव आदि का भी काफ़ी महत्त्व होता है। ऐसे शो की सफलता की ज़िम्मेदारी उसके होस्ट पर भी होती है। इससे होस्ट को दर्शकों की रुचि, उनके मनोरंजन, उनकी भावनाओं आदि का भी ध्यान रखना आवश्यक होता है। पुराने फिल्मी गानों में भारतीय शास्त्रीय संगीत की झलक मिलती है, तो आज के फिल्मी गानों में भारतीय और पाश्चात्य दोनों का मिश्रण दिखाई देता है। स्वरों के आरोह– अवरोह, सुर, ताल, राग–रागिनियों, पॉप म्यूज़िक आदि की जानकारी यदि कंपीयरिंग करने वालों को रहती है, तभी वह लोकप्रिय बनने में सफल होता है। यही कारण है कि ऐसे रियलिटी शो के होस्ट भी सफल गायक रहे हैं। ऐसे शो जो केवल मनोरंजन पर आधारित नहीं हैं, बल्कि उनके पीछे का उद्देश्य सामाजिक सरोकारों से संबद्ध है, उनमें फूहड़ भाषा का प्रयोग प्रतिकूल प्रभाव उत्पन्न करता है। सा रे गा मा पा जैसे रियलिटी शो का उद्देश्य गायन के क्षेत्र में पूरे भारत से नई प्रतिभा की तलाश है जो मंगलकारी उद्देश्य को लेकर चल रहा है। इससे प्रतिभागी उत्तर, पूर्व, दक्षिण, पश्चिम यानी भारत के किसी भी कोने से आ सकते हैं। अतः होस्ट यदि प्रतिभागियों की भाषा और संस्कृति के सौंदर्य का उल्लेख करें तो इसका अनुकूल प्रभाव पड़ता है और उस मंच पर प्रतिभागी को आत्मीयता की अनुभूति होती है। होस्ट कभी–कभी ऐसे प्रतिभागियों से अपनी भाषा में संगीत सुनाने के लिए कहते हैं, ताकि उन्हें यह एहसास हो कि उनकी भाषा का भी उतना ही महत्त्व है। होस्ट कभी–कभी जजों से संगीत सुनाने का आग्रह भी करते हैं, ताकि प्रतिभागियों को उनके साथ गाने का अवसर मिले और आत्मीयतापूर्ण वातावरण निर्मित किया जा सके।

शास्त्रीय गायन भारत में आरंभ से ही काफ़ी लोकप्रिय रहा है। ठुमरी गायन शैली मध्यकालीन प्रसिद्ध शैली रही है। ठुमरी और इसके संबद्ध रूप हैं– कजरी, चैती, होरी, बारहमासा आदि। ठुमरी गायन में भावनाओं की अभिव्यक्ति होती है। लालसा, क्रोध, वेदना आदि को इसके माध्यम से व्यक्त किया जाता है। ठुमरी गायन के लिए साहित्य और इतिहास को जानना और समझना भी आवश्यक है। इसकी पहचान एक विशेष बोल की पुनरावृत्ति है– जैसे– कहते हैं, मोसे ना बोलो...। आपने पद्मश्री, पद्म भूषण, पद्मविभूषण आदि कई सम्मानों से सम्मानित गिरिजा देवी को दूरदर्शन पर कई बार सुना होगा। उनकी ठुमरी प्रेम, भक्ति और विरह पर आधारित है। उन्होंने आरंभ में ही ठुमरी के दुर्लभ राग खमावती में अपना गायन प्रदर्शित किया था। वे निरंतर संगीत में सक्रिय रहीं। एक बार उन्होंने कहा, "मैं जो भी रचनाएँ गाती हूं, मेरा टप्पा, ठुमरी या ख्याल, सभी पारंपरिक हैं। मैंने कभी कोई

नया राग नहीं बनाया। मैंने केवल वही सीखा जो मेरे गुरुओं ने मुझे सिखाया, न कि किसी किताब से।"

स्वाभाविक है कि ऐसे कार्यक्रमों की कंपीयरिंग में ठुमरी के सभी पक्षों के बारे में बताने से श्रोताओं को अधिक आनंद मिलेगा। गिरिजा देवी बनारस घराने की थीं तो इस घराने की विशिष्टताओं के बारे में जब श्रोताओं को पता चलेगा, तो उनकी रुचि और भी विकसित हो जाएगी। जब गिरिजा देवी ने गाया 'बरसन लागी बदरिया' तो कंपीयरिंग में इसकी पृष्ठभूमि के उल्लेख से श्रोताओं पर अनुकूल प्रभाव पड़ेगा। जब गिरिजा देवी की आवाज़ में गूँजता था 'संवरिया को देखे बिना नाही चैना' तो इसके राग, रस आदि का उल्लेख यदि कंपीयरिंग में हो जाए तो संगीत और साहित्य का अनूठा संगम होगा। उसी तरह 'गगन गरज चमकत दामिनी' में कौन सा राग है, इसे किन अवसरों पर गाया जाता है जैसी बातों के द्वारा श्रोताओं और दर्शकों को संगीत की विशेषताओं से भी परिचित कराया जा सकता है।

10.3 गैर–फिल्मी गानों पर आधारित कार्यक्रम

फिल्मी गानों के अलावा, गैर–फिल्मी गानों के कार्यक्रम भी कम नहीं हैं। पिछले कुछ समय से रैफ पैरोडी, पॉप, रिमिक्स का टी.वी. की छोटी–सी स्क्रीन पर काफ़ी बोलबाला है। जाहिर है कि इस तरह से गानों की कंपीयरिंग में चुटीलापन, छेड़छाड़, हंसी–मज़ाक की बहुतायत होती है। इसमें द्विअर्थक संवादों ने एक नया ही पेंच डाल दिया है। यह कई बार अश्लीलता के दायरे में प्रवेश कर जाता है। कहना चाहिए कि वह होता ही उस दायरे में है और उससे प्रायः बाहर नहीं निकल पाता है। आज चैनलों की व्यावसायिक प्रतियोगिता के बीच और टीआरपी बढ़ाने के उद्देश्य के कारण अभिरुचियों के साथ खिलवाड़ हो रहा है और ज्यादा से ज्यादा फूहड़ होने की जैसे होड़ मचने लगी है। कंपीयरिंग के आलेखों में इन पर नज़र रखने की ज़रूरत है। कंपीयरिंग का आलेख तैयार करने में फूहड़ता की ओर जाने वाला रास्ता बहुत आसान दिखता है और उस पर बहुत सारे लोग चलने भी लगे हैं।

इसी से जुड़ी एक और बात ध्यान में आती है कि ऐसी कंपीयरिंग महानगरोन्मुख हैं, जिनमें भारतीय संस्कारों का नहीं, बल्कि पाश्चात्य संस्कृति का वर्चस्व है। इस तरह की कंपीयरिंग की शैली ने एक फूहड़ महानगरीयता की ओर संकेत किया है। इसमें हिंदी के विभिन्न इलाकों की अपभ्रष्ट बोली बानी, कस्बों में पलती–पुसती सौंदर्य–विरोधी जीवन शैलियों, गाँव घर की फूहड़ कहावतों आदि को महत्त्व दिया गया है जो नव धनाढ्यों और सूचना के नए तंत्रों के दृष्टिकोण की संरचना में सम्मिलित होकर भारतीय संस्कृति की गरिमा की विपरीत दिशा में चलता हुआ दिखने लगा है। आज के युवाओं को यह रहस्य लोक जान पड़ता है और वे इसके आकर्षण में भ्रमित भी होने लगते हैं। इसमें देह और मन की मुक्ति के भाषिक बिंबों की कमी नहीं है, लेकिन वे एक सीमित उच्चवर्गीय संभ्रान्त की सौंदर्याभिरुचियों से जन्म लेते हैं और एक बड़ी सामाजिक संस्कृति का दावा करने लगते हैं। इसका एक रचना–विरोधी आयाम भी है। वह यह कि टी.वी. के पर्दे पर नई आभिजात्य सूझ, सुरुचिपूर्ण सोच–समझ और नई कृतिकारिता के लिए जगह ही नहीं बनने दी जाए। इस समाज में गाँवों और कस्बों में फैली हुई जो हास–परिहास की विस्तृत और बहुत मर्ममय निधियाँ हैं, उन्हें लगभग निरर्थक बना दिया जाए। दूसरे शब्दों में

यदि कहा जाए तो यह कहना अनुचित नहीं होगा कि कंपीयरिंग की नई पद्धति हमारे समाज और संस्कृति के अनुकूल नहीं है। पश्चिमी संस्कृति और महानगरों के गठबंधन से निर्देशित होता बाज़ारवाद भारतीय संस्कृति को कमतर और हीन मानने लगा है। भारत की शिष्ट संस्कृति और लोक–संस्कृति के महत्त्वपूर्ण आख्यान हैं, जिनकी उपेक्षा उचित नहीं है।

गीत–संगीत के कार्यक्रमों में जिस कार्यक्रम ने सबसे आगे पहुँच जाने की बाजी मारी है वह अंत्याक्षरी है। एक समय में कविता की पंक्ति के अंत के अक्षर के आधार पर अंत्याक्षरी का ताना–बाना बुना जाता था। इस तरह यह एक साहित्यिक उद्‌गम वाला खेल था लेकिन बाद में इसका उपयोग फिल्मी गानों के स्पर्धात्मक खेलों में किया जाने लगा। काफ़ी शुरू में रेडियो पर शील ने फिल्मी गानों की अंत्याक्षरी को काफ़ी लोकप्रिय बनाया था। आपने सोनू निगम, अन्नू कपूर और सचिन को फिल्मी गानों वाली अंत्याक्षरी के एंकर के रूप में कार्यक्रम को संचालित करते हुए देखा होगा। इस तरह के कार्यक्रम का जो प्रारूप होता है वह काफ़ी जटिल हो गया है। अब एक ही कार्यक्रम में फिल्मी गानों, रागों पर आधारित गीतों, भजन, ग़ज़ल, कव्वाली आदि प्रतिभागियों से गवा लिए जाते हैं। शुरू से लेकर अंत तक कार्यक्रम की रूपरेखा और उसके चरण पूर्व– निश्चित होते हैं लेकिन कंपीयरिंग के समय सूत्रधार को बहुत कुछ तात्कालिक रूप से कहना होता है। इस तरह से अंत्याक्षरी का कार्यक्रम लिखित और अलिखित का गठजोड़ होता है। अंत्याक्षरी के नए–नए रूपों ने इस बात की गुंजाइश भी पैदा की है कि नए–नए फॉर्मेटों में कार्यक्रम परिकल्पित किए जा सकें और उनकी कंपीयरिंग के ढाँचे में भी परिवर्तन लाया जा सके।

अंत्याक्षरी के कार्यक्रमों के बारे में यह समझने की ज़रूरत है कि इसमें पुराने से पुराने और नए से नए गानों को गाया जा सकता है। इन्हें गाने वाले प्रायः युवक–युवतियाँ होते हैं जो गाने–बजाने की दुनिया में अपनी प्रतिभा लेकर प्रवेश करना चाहते हैं। इस तरह इसमें नए कलाकारों और सुपरिचित गानों के बीच सेतु बनाए जाते हैं। कंपीयरिंग करने/लिखने में इस पर ध्यान रखना चाहिए। अंत्याक्षरी, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया कि आज भानुमती का पिटारा बना दी गई है। उसमें तरह–तरह के गीत–संगीत शामिल कर लिए गए हैं। अंत्याक्षरी की कंपीयरिंग में इस तरह की विविधता को कैसे संगति दी जाए, यह चुनौती होती है।

फिल्मी गानों के कार्यक्रमों में वे कार्यक्रम काफ़ी प्रसिद्ध होते हैं विशेष रूप से प्रौढ़ों के बीच जो किसी पुराने गायक, निर्देशक या अभिनेता–अभिनेत्री की स्मृति में प्रस्तुत किए जाते हैं। गुजरा हुआ ज़माना एक बार फिर याद आ जाता है। कुंदन लाल सहगल, राजकपूर, नर्गिस, दिलीप कुमार, बिमल रॉय, नूतन, मधुबाला, बलराज साहनी आदि से संबंधित फिल्मी गाने पुराने फिल्म–दृश्यों का स्मरण दिला देते हैं। इस तरह के कार्यक्रमों की कंपीयरिंग में हिंदी फिल्मों के इतिहास से परिचित होना ज़रूरी है। इन कार्यक्रमों की कंपीयरिंग में प्रायः यह कहने का वैध दबाव होता है कि उस समय के गाने कविताओं के निकट थे। उनका साहित्य से एक रिश्ता बनता था और उनमें मानवीय समस्याओं, सामाजिक सरोकारों, मानवीय भावों आदि को महत्त्व दिया गया था। इन कार्यक्रमों के आलेखों में लगातार इस बात को कहने की भी गुंजाइश बनी होती है कि धुनों में भारतीय रागों और वाद्यों

का प्रायः उपयोग होता था और पश्चिमी संगीत से यदि कुछ उधार भी लिया जाता था तो वह भारतीय संगीत के महत्त्व को कम नहीं कर पाता था। वे दिन भारतीय संगीत के बेहतर दिन थे। पुराने गीतों के बारे में बात करते हुए कंपीयरिंग में इन बातों का ज़िक्र होना ज़रूरी है।

10.4 कंपीयरिंग की भाषा

भारतीय गीत–संगीत की परंपरा में उर्दू का गहरा दखल रहा है। समय–समय पर टेलीविज़न पर प्रसारित ग़ज़लें दर्शकों और श्रोताओं के बीच बहुत लोकप्रिय हो जाती हैं। दरअसल यह उफान दिखे या न दिखे ग़ज़लों को सराहने वाला एक बड़े तबके का ऑडियंस हमेशा मौजूद रहा है। मेंहदी हसन, गुलाम अली, बेगम अख्तर, जगजीत सिंह वगैरह की लोकप्रियता इसी ओर संकेत देती है। ग़ज़लों और कव्वालियों या नज़्मों की सांगीतिक अदायगी वाले कार्यक्रमों में जो कंपीयरिंग होती है उसमें एंकर वही हो सकता है जो उर्दू ज़बान की बारीकियों से बावस्ता हो और इन आलेखों को वही लिख सकता है जो ग़ज़ल की परंपरा को तो जानता ही हो, उर्दू के मिजाज़ को भी समझता हो। इन पेचीदगियों के बिना ऐसे कार्यक्रमों की कंपीयरिंग निरर्थक और अरुचिकर होगी। इस्लामी रवायत का मुजाहिरा कव्वालियों में बखूबी दिखता है। हाल में नुसरत फतह अली और उसके पहले साबिर बंधुओं ने कव्वाली को बहुत लोकप्रिय बनाया। हिंदुस्तान में शंकर शंभू तो थे ही, मुहम्मद रफी की गाई कव्वालियों ने कमाल की कशिश पैदा की। इस तरह के कार्यक्रम जो पेश करते हैं उन्हें कव्वाली के सूफिआना पहलू की अच्छी जानकारी होनी चाहिए। कहना यह है कि हर सूचना का इस्तेमाल कंपीयरिंग में हो ही यह ज़रूरी नहीं है लेकिन जान–बूझकर किसी महत्त्वपूर्ण सूचना को छोड़ना और एक सिरे से किसी के बारे में कुछ न जानना कंपीयरिंग के लिए अनुकूल नहीं है।

गीत–संगीत के कार्यक्रम में लोकगीतों का काफ़ी महत्त्व है। अधिकांश धुनें इन परंपरागत गीतों के आधार पर बनाई जाती हैं। यहाँ तक कि शास्त्रीय गायन वाले घूम–फिर कर वहीं पहुँचते हैं। लोक की कुछ धुनें कितनी ही अखिल भारतीय– सी क्यों न सुनाई पड़ें, उनका उद्‌गम किसी खास क्षेत्र या इलाके में हुआ होता है। कजरी और बदोहिया अवध में ही पैदा हो सकते थे। यह जो स्थानीयता है और स्थानीयता के जो अपने विशिष्ट रंग हैं, लोक संगीत के बारे में बात करते हुए उनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती है। ऐसे कार्यक्रमों की कंपीयरिंग में स्थानीयता के अंतर्भाव की गहरी माँग की जाती है। जाहिर है कि इसमें खास क्षेत्र के संगीत की खास जानकारी से परिचित होने की ज़रूरत होती है। ऐसा न हो तो कार्यक्रम बेजान हो जाता है।

10.5 संगीत का ज्ञान

भारतीय संगीत की सबसे अनुशासित संगीत परंपरा शास्त्रीय संगीत ही है, इसमें कोई दो राय नहीं है। इसी सदी में पंडित विष्णु नारायण भातखंडे ने हिंदुस्तानी संगीत को जो व्यवस्था, संगति, रूप वगैरह दिया और उसके सैद्धांतिक आधारों पर बहुत विस्तृत और मौलिक तरीके से विचार– विमर्श किया, उसने हिंदुस्तानी संगीत के बिखराव को खत्म करके उसे एक निश्चित और गरिमामय स्वरूप प्रदान किया है। इसके साथ ही हिंदुस्तानी संगीत की गायकी का जो पुनर्जागरण हुआ, उसने

अब तक कई ऐतिहासिक पड़ाव पार कर लिए हैं। शास्त्रीय गायन की परंपरा; घरानों, रागों, गुरु–शिष्य परंपरा आदि के आधार पर तो बढ़ी ही है, उसमें प्रयोगकर्ता भी कम नहीं हुए हैं। परंपरा और विद्रोह दोनों ही यहाँ दिख जाते हैं। जाहिर है, शास्त्रीय संगीत की कंपीयरिंग सबसे अधिक कठिन है। इस क्षेत्र में अज्ञानता से एक कदम भी आगे बढ़ा नहीं जा सकता है। कार्यक्रम में आए गायक का घराना तो बताना ही पड़ेगा, वह किस राग को पेश कर रहा है, यह भी बताना पड़ेगा। राग की प्रकृति के बारे में कुछ सामान्य बातें कहनी ही पड़ेंगी। गायक का भारतीय शास्त्रीय परंपरा में क्या मौलिक योगदान है और उसने परंपरा को किस तरह से आगे बढ़ाया है इसका भी निश्चित उल्लेख करना होगा। जो गायक बंदिश प्रस्तुत करने जा रहा है, उसके चरण क्या हैं, यानी कि उसका आदि, मध्य और अंत क्या है, यह सब कुछ शास्त्रीय संगीत की पदावली है, जिन्हें बताना ही पड़ेगा। इस तरह की कंपीयरिंग में जो आलेख प्रस्तुत होगा, उसकी भाषा बहुत गरिमामय होगी। शास्त्रीय संगीत केवल गायकी तक सीमित हो, ऐसा बिलकुल नहीं होता है। यहाँ जितना गाने का महत्त्व है, उतना ही बजाने का भी महत्त्व है। अगर गायकी में भीमसेन जोशी, मल्लिकार्जुन मंसूर, किशोरी अमोनकर, करीम खान जैसे बहुत बड़े–बड़े नाम हैं तो बजाने वालों में बांसुरीवादक हरि प्रसाद चौरसिया, सरोदवादक अमजद अली खान, शहनाई वादक बिस्मिल्लाह खान भी कुछ कम बड़े नाम नहीं हैं। इनकी कंपीयरिंग में भी संगीत से संबंधित उनकी विशिष्ट बातों और उनके अवदान का उल्लेख ज़रूरी होगा।

शास्त्रीय संगीत को सारे गाने बजाने वाले उसकी पूरी शास्त्रीयता में ही ग्रहण करते हों ऐसा नहीं है। उसके उपशास्त्रीय रूप भी हैं। ध्रुपद और ख्याल है, तो ठुमरी भी है। पहले दो शास्त्रीय हैं तो तीसरी उपशास्त्रीय है। उपशास्त्रीय का मतलब हुआ जिसमें शास्त्र और लोक को मिला दिया गया हो। सिद्धेश्वरी देवी, रसूलन बाई, गिरिजा देवी और बेगम अख्तर की गायकी का रूप ऐसा ही है। लोक और शास्त्र के इस सम्मिलन में गहरा मर्म और भावमयता है। इस संस्पर्श को समझ पाना संवेदना के गहरे रहस्यलोक में पहुँचना है। कंपीयरिंग में यह अवश्य होना चाहिए।

10.6 कंपीयरिंग लेखन के लिए महत्त्वपूर्ण बिंदु

- यह ध्यान रखना आवश्यक है कि कंपीयरिंग किस तरह के कार्यक्रम की होनी है,
- संगीत के कार्यक्रम की कंपीयरिंग में संगीत की शब्दावलियों और भाषा का प्रयोग आवश्यक है।
- हर क्षेत्र की भाषा की प्रयुक्तियाँ हैं, जिनके बारे में जानना कंपीयरिंग लेखन के लिए आवश्यक है,
- कंपीयरिंग लेखक को उस गायक के व्यक्तित्व और संगीत के क्षेत्र में उसके अवदानों के बारे में लिखना होगा,
- अंत्याक्षरी के कार्यक्रम की कंपीयरिंग में प्रतिभागियों के बारे में बताना ज़रूरी है। इसको कैसे रुचिकर बनाकर प्रस्तुत किया जाए, इसका भी ध्यान रखना

पड़ेगा। कोई प्रतिभागी फिल्मी गाना गाएगा, कोई कव्वाली गाएगा और कोई भजन या ग़ज़ल गाएगा, जिसका उल्लेख कब और कैसे करना है, यह कौशल कंपीयरिंग लेखक में होना चाहिए,

- सा रे गा मा पा जैसे रियलिटी शो की कंपीयरिंग में मनोरंजन के साथ उसके सामाजिक सरोकारों के उद्देश्य को भी उद्घाटित करना ज़रूरी है। इसके मानवीय सरोकारों का वर्णन भी आवश्यक है। इस तरह के कार्यक्रमों के कंपीयरिंग–लेखन में संवेदना और विचारों दोनों का संगुंफन आवश्यक होता है। साथ ही संगीत का भी सम्यक ज्ञान कंपीयरिंग लेखन के लिए ज़रूरी है।

- ग़ज़ल, ठुमरी आदि के कार्यक्रमों के कंपीयरिंग लेखन में गायक या गायिका की विशिष्टताओं के उल्लेख के साथ ग़ज़ल, ठुमरी आदि के इतिहास, इनकी परंपराओं तथा गायक या गायिका का इस क्षेत्र में अवदान आदि का वर्णन भी आवश्यक है। गायक और गायिका के घरानों, प्रस्तुति के राग, भाव आदि के बारे में भी जानकारी देना कार्यक्रम को रुचिकर बनाने की दृष्टि से अच्छा होता है। अतः कंपीयरिंग लेखन में इसका ध्यान रखना ज़रूरी है।

- कंपीयरिंग–लेखन में सुरुचि का ध्यान रखना उचित होता है। इसमें फूहड़ता के समावेश से बचना चाहिए।

- भाषा में सुरुचि, सौंदर्य, अनुकूलता, औचित्य, प्रवाहमयता, सरसता, चित्रमयता, संप्रेषणीयता आदि का भी ध्यान रखना आवश्यक है।

- कंपीयरिंग लेखक में यह कौशल होना चाहिए कि वह परिस्थिति के अनुसार चले और अनावश्यक वर्णन से बचे। उसकी शैली गायन के अनुरूप होनी चाहिए।

- कंपीयरिंग लेखक को टेलीविज़न के सभी प्रकार के तकनीकों जैसे मंच, वस्त्राभरण, प्रसाधन, कैमरा, प्रकाश व्यवस्था, ध्वनि व्यवस्था आदि से परिचित रहना चाहिए।

- कंपीयरिंग लेखक को कट, फेड इन, फेड आउट, डिजॉल्व, सुपर कंपोजिशन आदि संपादन की व्यवस्था का भी ज्ञान रहना चाहिए।

- इसके अतिरिक्त कंपीयरिंग लेखन में समय–सीमा का भी ध्यान रखना आवश्यक है।

10.7 कंपीयरिंग के लिए योग्यताएँ

- कंपीयरिंग करने वाले एंकर को गीत–संगीत का ज्ञान होना चाहिए।

- उसका हिंदी के साथ उर्दू भाषा पर भी अधिकार रहना चाहिए, क्योंकि ग़ज़ल, कव्वाली आदि की कंपीयरिंग के समय उसे उर्दू भाषा का ही अधिक प्रयोग करना पड़ेगा।

- कंपीयरिंग के लिए सही उच्चारण के लिए प्रतिबद्ध रहना चाहिए। कंपीयरिंग करने वाले को नुख्ता लगे शब्दों का भी सही उच्चारण आना चाहिए साथ ही तत्सम शब्दों के उच्चारण का भी उसे ज्ञान रहना चाहिए।

- कंपीयरिंग के लिए यह कौशल विकसित होना चाहिए कि यदि स्क्रिप्ट में नहीं लिखा हो और कार्यक्रम से संबंधित कुछ और बोलने की अचानक आवश्यकता पड़ जाए या फिर अचानक कार्यक्रम में कुछ परिवर्तन हो जाए, तो कंपीयरिंग करने वाला घबराए नहीं, बल्कि आवश्यकतानुसार शीघ्रता से स्क्रिप्ट में वह परिवर्तन कर ले।

- कंपीयरिंग के लिए टेलीविज़न के तकनीकों का ज्ञान रहना आवश्यक है।

- कंपीयरिंग करने वाले को रिकॉर्डिंग व्यवस्था से भी परिचित होना चाहिए ताकि समय की सीमा में वह अपना कार्य कर सके।

- टेलीविज़न पर किस तरह की वेश–भूषा और किस रंग की पोशाक से अच्छा प्रभाव पड़ सकता है, इसका भी उसे ज्ञान रहना चाहिए।

- कंपीयरिंग करने वाले को वाक्–कौशल से युक्त होना चाहिए।

- उसे प्रकाश–व्यवस्था, ध्वनि व्यवस्था, भाषा की प्रयुक्तियों, संगीत की शब्दावलियों आदि का भी ज्ञान होना चाहिए।

10.8 सारांश

इस इकाई में आपने यह जाना कि गीत संगीत से संबंधित कार्यक्रम क्या है। गीत संगीत में भी आपने फिल्मी और शास्त्रीय संगीत से संबंधित कार्यक्रमों के बारे में जाना। आप इस इकाई में इस बात से परिचित हुए कि इस तरह के कार्यक्रमों में कई तरह की विविधताएँ हैं और उन विविधताओं को ध्यान में रखकर ही कंपीयरिंग की जाती है। हर कार्यक्रम की अपनी कुछ विशिष्ट शब्दावलियाँ हैं। गीत संगीत में अनेक तरह के कार्यक्रम होते हैं, जिनकी भी अपनी महत्त्वपूर्ण और विशिष्ट शब्दावलियाँ और पदावलियाँ हैं। कंपीयरिंग में इनके प्रयोग पर विशेष ध्यान रखना पड़ता है। आपने यह भी जाना कि कंपीयरिंग में भाषा का विशेष महत्त्व है। यदि सामाजिक सरोकारों से संबंधित गीत–संगीत का कार्यक्रम है, भक्ति से संबंधित या फिर श्रृंगार से संबंधित गीत संगीत का कार्यक्रम है, तो कंपीयरिंग में इनका उल्लेख होना चाहिए। ग़ज़ल, ठुमरी आदि की विशेषताओं से भी कंपीयरिंग करने वाले का परिचित रहना आवश्यक होता है। आपने इस इकाई में यह भी जाना कि कंपीयरिंग लेखन में किन–किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक होता है और कंपीयरिंग करने वाले की योग्यता क्या होनी चाहिए।

यहाँ यह कहना भी आवश्यक है कि कंपीयरिंग कोई मशीनी भाषा–व्यवहार नहीं है और न ही यह कुछ अदाओं को दिखा देने का अवसर ही है। कंपीयरिंग के लिए सूत्रधार होता है। उसके हाथ सूत्र होते हैं। एक अच्छी कंपीयरिंग में ये सूत्र उलझते नहीं हैं। यह सूत्रधार प्रस्तावक होता है। वह विषय के बारे में तो बता ही रहा होता है, साथ ही कुछ विशिष्ट बातों की संस्तुति भी कर रहा होता है। जाहिर है कि उसकी भाषा में चीजों को विश्वसनीय बनाने का कौशल होता है। वह

कार्यक्रम को आगे बढ़ाने और सफल बनाने का साधन भी है। वह प्रमुख नहीं होता है लेकिन उसके बिना प्रमुखता भी हासिल नहीं की जा सकती है। इस तरह से कंपीयरिंग मध्यस्थता का काम है। जैसे मध्यस्थ किसी चीज की खूबियों के बारे में कई तरह से अपने ग्राहक को संतुष्ट करता है वैसे ही कंपीयरिंग करने वाला अपने दर्शकों और श्रोताओं को कार्यक्रम से संतुष्ट करना चाहता है।

10.9 अभ्यास के प्रश्न

1. फिल्मी गानों पर आधारित कार्यक्रमों के बारे में अपने विचार व्यक्त कीजिए।
2. गैर फिल्मी गानों पर आधारित कार्यक्रमों से आप क्या समझते हैं? उदाहरण देकर समझाइए।
3. कंपीयरिंग का क्या महत्त्व है और कुशल कंपीयरिंग में किन–किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है?
4. कंपीयरिंग की भाषा पर प्रकाश डालिए।
5. कंपीयरिंग स्क्रिप्ट– लेखन में आप किन–किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक समझते हैं?
6. किसी कार्यक्रम को सफल बनाने में कंपीयरिंग की क्या भूमिका होती है? उदाहरण देकर समझाइए।
7. गीत–संगीत से संबंधित किसी कार्यक्रम की स्क्रिप्ट तैयार कीजिए।

10.10 महत्त्वपूर्ण पुस्तकें

1. भारत में सूचना प्रौद्योगिकी का विकास, लेखक – पंकज चौधरी, संसार साहित्य, नई दिल्ली
2. दृश्य–श्रव्य माध्यम कला और तकनीक, लेखक – गौरी शंकर रैणा, श्री नटराज प्रकाशन, नई दिल्ली
3. मीडिया समग्र (भाग 1 एवं भाग 2), लेखक – प्रो. रमेश जैन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, जयपुर एवं दिल्ली
4. मीडिया के सामाजिक सरोकार, लेखक – डॉ. निशांत सिंह, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली
5. टेलीविज़न की भाषा, लेखक – हरीश चन्द्र बर्णवाल, राधा कृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली